www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रति योजना
मथुरा 66568
सं०

नवसृजन हेतु सृजनात्मक संकल्पों की आवश्यकता

— श्रीराम शर्मा आचार्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI

MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नवसृजन हेतु सृजनात्मक संकल्पों की आवश्यकता

❖

धर्म परम्परा में संकल्प कृत्य को प्रमुखता दी गयी है। सन्ध्या वन्दन से लेकर ब्रह्मभोज तक के धर्म कृत्यों के आरम्भ में पुरोहित अपने यजमानों से संकल्प कराते हैं। हाथ में जल, अक्षत, पुष्प लेकर अमुक धर्म कृत्य सम्पन्न करने की घोषणा को संस्कृत भाषा की शब्दावली में जोर-जोर से उच्चारित किया जाता है। यजमान के वंश, गोत्र, वर्तमान काल के तिथि मास का उच्चारण भी इस संकल्प घोषणा में रहता है। संकल्प कृत्य न कराने पर धर्मानुष्ठान अधूरे माने जाते हैं। श्रावणी पर्व पर उपकर्म किया जाता है उसमें हेमाद्रि संकल्प ही प्रधान है।

विचारणीय यह है कि 'संकल्प-कृत्य' को प्रमुखता और प्राथमिकता क्यों दी गई ? खोजने पर यह मनोवैज्ञानिक तथ्य सामने आ खड़ा होता है जिसमें किसी प्रयास को सफलता के लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए उसका आरम्भ दृढ़ संकल्प के साथ किए जाने की आवश्यकता बताई गई है।

आमतौर से लोग अनेक मनोरथों के लिए मन चलाते रहते हैं, इन्हें मनोकामना कहा जाता है। उसमें कल्पना भर होती है, सुखद प्रतिफल का लालच भर मनः क्षेत्र में छाया रहता है। रंगीन कल्पनाओं की उड़ानें उड़ाते रहने वाले ललचाते तो रहते हैं पर अभीष्ट को प्राप्त करने का कोई आधार नहीं पाते और इच्छा पूर्ण न होने का रोना रोते रहते हैं। इसका कारण एक ही है कि इच्छा—मात्र इच्छा ही बनकर रह गई। वह संकल्प के रूप में विकसित न हो सकी। शेखचिल्ली की बहुचर्चित कहानी सर्वविदित है, वह कल्पना की आधार रहित उड़ानें उड़ाता रहा—फलतः वर्तमान की जागरूकता को उस दिवा स्वप्न के लिए गवा बैठा। बेचारे को मजूरी से हाथ धोना पड़ा—अपमानित हुआ सो अलग। उपहास तो उसका इस समय भी उड़ा रहे हैं। यों शेखचिल्ली की योजना गलत नहीं थी। कम पूँजी से भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यवसाय बढ़ते हैं और उसमें वैसी सफलता मिलने के अनेकों उदाहरण भी हैं जैसी कि उसने चाही थी। फिर असफलता क्यों मिली ? इस प्रश्न के एक ही उत्तर में उसे—संकल्प का अभाव ही कह सकते हैं।

धर्मकृत्यों को पूर्ण करने में तो इस क्षमता को विकसित करने की आवश्यकता इसलिए भी पड़ती है कि सांसारिक लाभ न होने के कारण कहीं निश्चय न बदल जाय—उत्साह ठण्डा न पड़ जाय—अन्यमनस्कता न छाने लगे—उदासी के साथ-साथ निष्क्रियता उत्पन्न न होने लगे। उस आशंका को निरस्त करने के लिए पहले से ही सङ्कल्प की सार्वजनिक घोषणा की जाती है। इससे वह कृत्य प्रतिष्ठा का प्रश्न बनता है। पूर्वजों का उल्लेख करके उस सङ्कल्प के साथ उनकी प्रतिष्ठा भी जोड़ ली जाती है। संकल्प विस्मरण न होने लगे इसलिए पुरोहित उस उद्घोष के साथ वंश परम्परा वर्तमान तिथि मासका भी हवाला देते हैं। इतना कर लेने पर एक मनोविज्ञान सम्मत सुदृढ़ मनःस्थिति उत्पन्न होती है। श्रेष्ठता की दिशा में बढ़ने के लिए तो उसकी नितान्त आवश्यकता है यों जरूरत तो उसकी सामान्य व्यावसायिक कामकाजों और कुछ नया निर्माण करने में भी आये दिन पड़ती है।

संकल्प का अपना विज्ञान है। उसे कर्म का बीजारोपण कह सकते है। बेसिर-पैर की, अनिश्चित और असंगत कामनाएँ बाल चंचलता की श्रेणी में गिनी जाती हैं, उनके सफल होने के लिए देवी-देवताओं से लोग मनौती माँगते रहते हैं किन्तु कोई योजनाबद्ध प्रयास आरम्भ नहीं करते, फलतः वे रंगीनियां प्रायः असफलही रहती हैं। सङ्कल्प इससे भिन्न है उसमें सोच विचार कर निश्चय किए जाते हैं। निश्चयों को मन में छिपाकर नहीं रखा जाता वरन प्रकट किया जाता है। उसकी क्रमबद्ध योजना बनाई जाती है। तत्परता पूर्वक और तन्मयता पूर्वक मन लगाने के लिए साहस जुटाया जाता है। साधन एवं सहयोग एकत्रित करने का ताना-बाना बुना जाता है और उसके लिए समुचित दौड़ धूप की जाती है। कठिनाइयाँ आ सकती हैं और उनका सामना अथवा समाधान करने के लिए पहले से ही क्या तैयारी रखी जा सकती है इन सब प्रश्नों पर गम्भीरता एवं दूरदर्शिता के साथ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विचार किया जाता है। जानकारों के साथ परामर्श लिया जाता है। सामयिक परिवर्तनों की गुन्जायश रहती हैं। ऐसे सुनिश्चित प्रयत्नों को सङ्कल्प कहते हैं।

निश्चय कहीं उधेड़-बुन की अनिश्चित स्थिति में ही न पड़े रहें इसलिए परिचय क्षेत्र में उसकी जानकारी कराई जाती है। इससे स्वजन सहयोगियों को उस कार्य मे सहायता कर सकना सम्भव होता है। अपने सामने भी आत्म-प्रतिष्ठा का प्रश्न खड़ा हो जाता है। सफलता मिलने पर अपने चिन्तन एवं प्रयास को प्रतिष्ठा मिलती है। असफल होने पर उपहासास्पद बनना पड़ता है। अपनी हेटी न होने देने के लिए लोग बहुत कुछ दाँव पर लगाते हैं। शिथिलता से जूझते और पुरुषार्थ को जगाते हैं। इस प्रकार की मनोभूमि बन जाना—अभीष्ट प्रगति की सुनिश्चित रूप रेखा बन जाना—एक प्रकार से सफलता का आधा सोपान पूर्ण कर लेना है। असफलता का बहुत बड़ा कारण परिस्थितियों की प्रतिकूलता नहीं मन: स्थिति की दुर्बलता होती है। अनिश्चित अव्यवस्थित अनुत्साह की स्थिति ही असफलता के लिऐ जिम्मेदार होती है।

सङ्कल्प और असङ्कल्प का अन्तर समझने वालों को असफलता से बचने और सफलता के लक्ष्य तक पहुँचने में विशेष कठिनाई नहीं होती। धर्मानुष्ठानों में सङ्कल्प कृत्य के इस महान तथ्य को ध्यान में रखते हुसे प्रमुखता और प्राथमिकता दी गई है। वह तथ्य मात्र धर्म कृत्यों तक सीमित नहीं है वरन प्रत्येक प्रयास को सफल बनाने के लिए समान रूपसे लागू होता है। सरकारी और गैर सरकारी—वैयक्तिक और सामूहिक—धार्मिक और भौतिक क्षेत्रों के महत्व पूर्ण कार्य सर्व प्रथम योजना बद्ध रूप में ही सामने आते हैं। घोषणा करने वालों के पुरुषार्थ और व्यक्तित्व को प्रतिष्ठा के दाव पर अपनी बाजी लगानी पड़ती है। मनुष्य का आलसी और चचल स्वभाव इससे कम दबाव में बेकाबू ही रहता है। कछुए और खरगोश की दौड़ में कछुए का बाजी मारना और खरगोश का पिछड़ जाना सङ्कल्प शक्ति की प्रखरता और उपेक्षाग्रस्त आलस्य के परिणामों पर ही प्रकाश डालते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रत्येक परिवार को नव निर्माण के लिए अगले दिनों कुछ करने के लिए, सुनिश्चित सङ्कल्प लेने के लिए पुकारा और झकझोरा जा रहा है। बात यह है कि किसी उपयोगी तथ्य से परिचित होना, उसमें सहमत होना, समर्थन करना है तो अच्छा, पर इतने भर से उस दिशा में कुछ करने की स्थिति बनती नहीं है। इसी प्रकार यह भी हो सकता है कि किन्हीं बुरी बातों में की बुराई समझ ली जाय, उसके दोष दुष्परिणाम जानकारी में रहें पूछने पर उन्हें उचित और हानिकारक कह भी दिया जाय। किन्तु इतने भर से यह आशा नहीं की जा सकती कि यदि वे बुराइयाँ अभ्यास में आ गई हों तो उन्हें छोड़ने के लिए कुछ कदम उठ सकेगा। अभ्यास और स्वभाव एक बहुत बड़ा कारण है। ढर्रे पर जीवन चर्या की गाड़ी लुढ़कती है। जो होता रहा है वह करते रहने के लिए मन करता है। परिवर्तन की बात कहने सुनने में जो अच्छी लगती है पर जब कुछ उलट पुलट करने की घड़ी होती है तो उसका साहस नहीं होता। अभ्यास को छोड़ने में सङ्कोच होता और डर भी लगता है। ढर्रा बदलने में कितनी असुविधा होती है इसे वे लोग भली-प्रकार जानते हैं जिन्हें मकान बदलने और बदली पर अन्यत्र जाने के अवसर सामने आते हैं। चिर अभ्यस्त प्रक्रिया मनुष्य के स्वभाव का अङ्ग बन जाती है और उसे छोड़ने पर असुविधा ही महसूस अनुभव होती है। क्रिया तन्त्र में परिवर्तन में उतनी कठिनाई नहीं होती जितनी कि मन को नई परिस्थिति के लिए सहमत करने में। इन भीतरी और बाहरी अवरोधों से जूझने में एक ही सबसे बड़ा आधार काम करता है—वह है—सङ्कल्प। सङ्कल्पवान—हर परिस्थिति का सामना करनेके लिए साहस उभारते हैं....आन्तरिक और परिस्थिति जन्य अवरोधों से जूझने का पराक्रम करते हैं। फलतः असमंजस हटता है और पुरुषार्थ की गतिशीलता प्रखर होती चली जाती है। लक्ष्य तक पहुंचने का यही राजमार्ग है।

समय की मांग है कि खण्डहरों का कूड़ा-करकट साफ किया जाय और उनके स्थान पर प्रगतिशीलता का भव्य भवन खड़ा किया जाय। जिन परिस्थितियों में इन दिनों हम रह रहे हैं वे घुटन से भर गई हैं। अवांछ-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नीयताओं की काली घटाएँ घिर रही हैं। घटाटोप अन्धेरा छाया हुआ है। प्रकाश के अभाव में ठोकर पर ठोकर लगने का कष्ट सहना पड़ रहा है। परिवर्तन की हर दिशा में माँग है। प्रश्न एक ही है कि प्रवाह को बदले कौन? अन्धेरे को प्रकाश में बदलने के लिए दीपक की तरह जले कौन? भीरुता के असमंजस में खड़े हुए लोगों को मार्ग दर्शन कराने के लिए अग्रिम पंक्ति में चले कौन? इन प्रश्नों का उत्तर जाग्रत आत्माओं की प्रखरता के अतिरिक्त अन्य कहीं से मिलता नहीं है। दुष्टता का दुस्साहस करने में ही अगणित कुकर्मियों को अभ्यस्त और पारगत पाया जा सकता है पर सदाशयता की परम्पराएं प्रचलित करने के लिए अग्रगमन कर सकने में तो उच्चस्तरीय साहसिकता की आवश्यकता पड़ती है पर उसका प्रचलन भी इन दिनों नहीं है। एक को देखकर दूसरे प्रेरणा ले सकें। सत्प्रवृत्तियों के समर्थन में ऐसा वातावरण भी कहीं दृष्टिगोचर नहीं होता। ऐसी दशा में युग अवतरण के लिए भागीरथी साहस कौन अपनाए? सर्वत्र छाए हुए सन्नाटे में अपना मौन खोलने के लिए जाग्रत आत्माओं के अतिरिक्त और किसी से भी आशा नहीं है।

फिर ऐसा क्यों होता है कि वे अपनी अन्तरात्मा को सन्तोष नहीं दे पाते, ईश्वर की अभिलाषा अधूरी रह जाती है, उनके द्वारा समाज को—युग को—जो लाभ मिल सकता था उनके लिए बहुभी कलपता बिलखता रह जाता है। यह दुर्घटना क्यों होती है। यह दुखदाई दुर्भाग्य क्यों कर आंखों के सामने खड़ा रहता है? यह हटाए क्यों नहीं हटता? श्रेय सौभाग्य से व्यक्ति ईश्वर, समाज, सबको क्यों वंचित रह जाना पड़ता है। ऐतिहासिक भूमिका निभा सकने में सर्व समर्थ प्रतिभाएं क्यों पछताते रहने और पछताते रखने की स्थिति में संसार से विदा होती है? इन अनेकों प्रश्नों का उत्तर ढूंढे नहीं मिलता? सब कुछ होते हुई भी कुछ नहीं की बिडम्बना—हटती नहीं क्यों नहीं, घटती क्यों नहीं, मिटती क्यों नहीं? इस अनबूझ पहेली का उत्तर खोजने पर भी कोई दे नहीं पा रहा है।

फुरसत न मिलने, व्यस्तता रहने, परिस्थितियां न होने जैसे बहाने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आत्म प्रवंचना के अतिरिक्त और किसी काम के हैं नहीं। उस शब्दाडम्बर में तथ्य एक ही रहता है कि उन कार्यों को निरर्थक समझा गया है। जिन कार्यों को महत्व दिया जाता हैं प्रमुखता उन्हीं को मिलती है। समय, श्रम, साधन पूरी तरह उन्हीं में जुटे रहते हैं। जिन्हें महत्वपूर्ण समझा जाता है। युग सृजन का उत्तरदायित्व यदि शरीर निर्वाह और परिवार पोषण समझा जाने लगे तो सहज ही अपनी क्षमताओं का एक बड़ा अंश उन कार्यों के लिए भी नियोजित होने लगेगा। इस विभाजनमें अनुभव हीनताके कारण जो काल्पनिक हानि दीखती है, समय आने पर प्रतीत होगा कि वह आशंका सर्वथा निरर्थक थी। एकाकी स्वार्थहीनता में तल्लीन रहने वालों की तुलना में वे हर दृष्टि से नफे में रहते हैं जो स्वार्थ परमार्थ का समन्वय मिला लेते हैं। सर्वोपरि बुद्धिमान वे हैं जो परमार्थ को ही स्वार्थ साधन मान लेते हैं। ऐसे लोग ही इस धरती के देवता बनते हैं। महामानवों में गिने जाते हैं। प्रकाश की ओर उन्मुख होने के कारण वह माया भी छाया की तरह पीछे-पीछे चलती दिखाई पड़ती है जो पकड़ने का आग्रह करने वालों से दूर ही रहती है।

श्रेष्ठता की साधना 'सङ्कल्प' से ही सम्भव होती है। सङ्कल्प को ही व्रत कहते हैं। व्रतधारी ही तपस्वी और मनस्वी कहलाते है। लक्ष्य की ओर शब्दवेधी बाण की तरह सनसनाते हुए चल पड़ने की क्षमता उन्हीं में होती है। संकल्प का कार्य है अमुक कार्य करने का—अमुक लक्ष्य तक पहुँचने का दृढ़ निश्चय। दृढ़ निश्चय का अर्थ है काम को करने की सुव्यवस्थित योजना बनाना उसके लिए समुचित श्रम साधन और मनोयोग लगाने की प्रतिज्ञा। प्रतिज्ञा का अर्थ है—आत्म-गौरव को दाव पर लगा देना—प्रयास को चरम पुरुषार्थ के साथ पूरा करना। मन: संस्थान की संरचना कर सकना 'सङ्कल्प का ही काम है। इसी से कहा जाता है कि प्राणवानों के संकल्प कभी अधूरे नहीं रहते। असफलताओं में बहुत बड़ा कारण लक्ष्य का निकृष्ट और कार्य पद्धति का अनिश्चित, अस्त-व्यस्त होना होता है। यदि आदर्श ऊँचा हो—उसे करने के लिए सच्चे और पक्के मन से निश्चय किया गया हो तो सम-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

झना चाहिए, आधा काम पूरा हो चुका। अगली सफलता हाथ में आ गई। अब तो उसको काम काजी आवरण पहनाना ही बाकी रह जाता है। पेड़ की विशालता और स्थिरता उसकी जड़ों की मजबूती और गहराई पर निर्भर रहती है। जमीन में जितनी गहरी जड़ें घुसती हैं पेड़ का तना उतना ही मोटा, ऊँचा, हरा भरा और फला फूला दीखता है। संकल्प को जड़ और सफलता को तना कहा जा सकता है। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए तत्व वेत्ताओं ने व्रतशील संकल्प के निर्धारण को कार्य की आधी सफलता माना है। यह मान्यता अक्षरशः सत्य है। जिसे सन्देह हो वह इस सच्चाई परीक्षा की स्वयं करके देख सकता है।

समय आ गया कि नव निर्माण की प्रवृत्तियों में अधिक प्रखरता का समावेश किया जाय। युग परिवर्तन के गतिचक्र की तीव्रता और अधिक बढ़ाई जाय। अवांछनीयता की सुरसा, अनैतिकता की ताड़का—और मूढ़मान्यता को सूर्पणखा की प्रस्तुत उच्छृंखलता को इसी तरह बरतने की छूट मिलती रहेगी तो इस विश्व उद्यान की शोभा सुषमा जलते भुनते—वीभत्स भयानक—श्मसान में परिणत होती चली जायगी। इस विनाश का कलंक उनके मत्थे बँधेगा जो समर्थ होते हुए भी मूक दर्शक बने बैठे रहे और समय चूक जाने का पश्चात्ताप अपने ऊपर लादे रहे।

जागरूकता पुरुषार्थ का प्रथम संकल्प है। हम में से प्रत्येक को कुछ सृजनात्मक संकल्प करने चाहिए। सृजनात्मक गतिविधियां अपनाना ही अपनी प्रौढ़ता का चिन्ह है। समय आ गया कि सद्विचारों को सत्कर्मों के साथ जोड़ दिया जाय। जिसने श्रेष्ठता स्वीकार कर ली हैं उससे उस उपलब्धि की सक्रियता के रूप में विकसित करने का अनुरोध करना चाहिए। श्रद्धा अन्तःकरणों में छिपी बैठी न रहे। वह शक्ति बनकर उभरे और परिवर्तन के लिए अपनी प्रचण्डता का परिचय प्रस्तुत करे।

क्र० १५०/ प्र०-युग निर्माण योजना, मु०-युग निर्माण प्रेस मथुरा मूल्य ६० पैसा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org